अनुसन्धान प्रवाह Anusandhan Pravah
(An Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary, Bilingual, E-Journal)
ISSN: 3108-1541
Vol.2, Issue 1,Year 2025, pp 97-107
URL : https://journal.sskhannagirlsdc.ac.in/
सदनलाल सावलदास खन्ना महिला महाविद्यालय
स्वर्ण जयन्ती वर्ष
2024-2025

पौराणिक वाड्.मय में वर्णित तीर्थराज प्रयाग: मत्स्य पुराण के विशेष सन्दर्भ में

संतोष कुमार पाण्डेय* & डॉ0 सिद्धार्थ सिंह**
* शोध छात्र, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)
** असिस्टेन्ट प्रोफेसर, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0), सम्बद्ध: वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय,जौनपुर (उ0प्र0)

सारांश:

गंगा, यमुना तथा सरस्वती नदी के संगम पर स्थित प्रयागराज हिन्दू धर्म के सर्वाधिक पवित्र तीर्थ नगरों में से एक है। यहाँ पर अन्तर्वेदी के माधव, मध्यवेदी के माधव, बहिर्वेदी के माधव, अक्षयवट, प्रतिष्ठानपुरी, नागवासुकी, कम्बलाश्वर नाग, सांध्यवट, भोगवती, हंसप्रयतन, शेषतीर्थ, कोटितीर्थ, दशाश्वमेघ, उर्वशी कुण्ड, ऋणमोचनतीर्थ, सरस्वती कूप, बड़े हनुमान मन्दिर या लेटे हनुमान मन्दिर, मनकामेश्वर मन्दिर, अलोपी मन्दिर, भारद्वाज आश्रम जैसे अनेक छोटे-बड़े तीर्थस्थलों का विस्तृत साम्राज्य फैला हुआ है। सभी छोटे-बड़े तीर्थ स्थलों को स्वयं में समाहित कर लेने तथा त्रिवेणी संगम स्थल होने के कारण इसे तीर्थराज (तीर्थों का राजा) कहा गया। सर्वप्रथम ब्रह्मा जी ने यहीं पर प्रकृष्ट यज्ञ किया, इस कारण इसे प्रयाग कहा गया। यहाँ पर ब्रह्मा, विष्णु, देवाधिदेव शंकर तथा अन्य सभी देवी-देवता निवास करते हुए। सर्वत्र इसकी रक्षा करते हैं

Article Publication:
Published online on: 30/12/2025

Corresponding Author:
प्रो संतोष कुमार पाण्डेय
शोध छात्र, प्राचीन इतिहास पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग, तिलकधारी स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0)
Email santoshau4@gmail.com

©S.S. Khanna Girls Degree College

Scan For Paper

इस कारण यह सर्वाधिक महत्व का धार्मिक नगर कहा जा सकता है। यह क्षेत्र लौकिक तथा पारलौकिक दोनों प्रकार के जीवन को उत्तम बनाने की दृष्टि से कल्याणकारी व महत्त्वपूर्ण है। कुम्भ, अर्द्धकुम्भ तथा माघ मेले जैसे धार्मिक आयोजन इस नगर के महत्व को कई गुना बढ़ा देते हैं।

बीज शब्द:- *पौराणिक वाङ्.मय, मत्स्य पुराण, तीर्थराज प्रयाग, तीर्थ स्थल, कुम्भ, अर्द्धकुम्भ, गंगा, यमुना तथा सरस्वती, त्रिवेणी संगम, प्रकृष्ट यज्ञ।*

वाङ्.मय का शाब्दिक अर्थ है- किसी भाषा में निहित सम्पूर्ण साहित्य। पौराणिक वाङ्.मय अथवा पौराणिक साहित्य की संख्या 18 बताई गई है, इन्हें मत्स्य पुराण, कूर्म पुराण, ब्रह्म पुराण, ब्रह्माण्ड पुराण, ब्रह्मवैवर्त पुराण, पद्म पुराण, वाराह पुराण, लिंग पुराण, शिव पुराण, स्कन्द पुराण, विष्णु पुराण, वामन पुराण, भविष्य पुराण, गरूण पुराण, अग्नि पुराण, भागवत पुराण, मार्कण्डेय पुराण, नारद पुराण के नाम से जाना जाता है। इन अष्टादश पुराणों का भारतीय संस्कृति में विशिष्ट स्थान है, इन्हें भारतीय संस्कृति का विश्वकोष कहा जा सकता है। इनमें ऐतिहासिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक इत्यादि विषयों से सम्बन्धित ज्ञान प्राप्त होते हैं। इन पौराणिक वाङ्.मयों में अनेक प्रकार के तीर्थस्थलों का वर्णन मिलता है, इनमें भी गंगा, यमुना, अदृश्य सरस्वती नदी के संगम पर स्थित प्रयाग का सर्वाधिक महत्व रहा है। इसे तीर्थराज, प्रयागराज, प्रयाग, कुम्भनगरी, संगम नगरी इत्यादि नामों से सम्बोधित किया जाता है। ये तीर्थस्थल भारतीय संस्कृति तथा भारतीय जन-जीवन का अभिन्न अंग प्रतीत होते हैं। य प्राचीन काल से भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँध सकने में सहायक रहे हैं। तीर्थ मुख्य रूप से वे पवित्र स्थल हैं जहाँ पर निवास करने वाले लोगों के आचार-विचार तथा व्यवहार में पूर्ण सात्विक भावना विराजमान रहती है। इस स्थान का महत्व इतना अधिक होता है कि वहाँ पर जाने मात्र से ही व्यक्ति के विचार सत्य की तरफ उन्मुख हो जाते हैं, वे धार्मिक तथा पुण्यप्रदायी कार्यों में प्रवृत्त हो जाते हैं। यह समस्त वातावरण ही सात्विकता से ओत-प्रोत प्रतीत होता है। यहाँ पर आने वाला व्यक्ति स्वयं ही इसी माहौल में ढलने लगता है इसी कारण पुराणों में तीर्थयात्रा को विशेष आदर की दृष्टि से देखा गया है। पद्मपुराण में तीर्थ यात्रा के महत्व का वर्णन करते हुए कहा गया है कि-

तीर्थेषु लभ्यते साधू रामचन्द्रपरायणः।

यद्दर्शनं नृणां पापराशिं दहति तत्क्षणे।।

तस्मात् तीर्थेषु मन्तव्यं नरैः संसारभीरूभिः।

पुण्योदकेषु सततं साधुश्रेणिविराजिषु।।[1]

यदि यह समझा जाए कि घूमने-फिरने, मनोरंजन करने के उद्देश्य से किसी भी तीर्थयात्रा पर जाने से हमें पुण्य प्राप्त हो जाएगा तो ऐसा नहीं है। पद्म पुराण के अनुसार जो व्यक्ति सम्पूर्ण विधान पूर्वक तीर्थ यात्रा करता है, जिसके हाथ, पैर व मन भलीभाँति सुसंयत हों वही विद्या, तप, कीर्ति तथा फल का भागी होता है-

विधिना गच्छतां नृणां फलावाप्तिर्विशेषता।

तस्मात् सर्वप्रयत्नेन तीर्थयात्रा विधिं चरेत्।

यस्य हस्तौ च पादौ च मनश्चैव संसयतम्।

विद्यातपश्च कीर्तिश्च स तीर्थफलमश्नुते।।[2]

स्कन्दपुराण के काशीखण्ड के अनुसार जो कोई काम, क्रोध, लोभ को छोड़कर तीर्थ में प्रविष्ट होता है, उसे ही तीर्थ यात्रा करने का अधिकार है-

अक्रोधनोऽमलमतिः सत्यवादी दृढ़व्रतः।

आन्मोपमश्च भूतेषु स तीर्थफलमश्नुते।।

इस संसार में हिन्दू धर्म की दृष्टि से जितने भी पवित्र तीर्थ स्थल हैं उसमें भारत भूमि में स्थित प्रयाग को सर्वाधिक पवित्र माना जाता है। प्रयाग शब्द 'प्र' उपसर्ग पूर्वक 'यज' धातु में 'घञ्' प्रत्यय लगाने से बनता है। स्कन्दपुराण के अनुसार इस स्थान पर ब्रह्मा जी ने प्रकृष्ट यज्ञ किया। इस कारण इसे प्रयाग कहा जाता है-

प्रकृष्टं सर्वयागेभ्यः प्रयागमिति गीयते।[3]

हिन्दू धार्मिक मान्यता के अनुसार सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा जी ने सृष्टि का निर्माण पूर्ण कर लेने के पश्चात यहाँ पर सर्वप्रथम यज्ञ किया। इसी प्रथम यज्ञ के 'प्र' और 'याग' (यज्ञ) के सन्धि के परिणामस्वरूप प्रयाग नाम प्रचलित हुआ। इस पवित्र नगरी का निर्माता स्वयं भगवान विष्णु को बताया जाता है, वे यहाँ वेणीमाधव रूप में सदैव विराजमान रहते हैं। प्रयाग को तीर्थराज भी कहा जाता है क्योंकि यह गंगा, यमुना व सरस्वती नदी के संगम तट पर स्थित है-

सितासिते सरिते यत्र सं थे तत्राप्लुतासो दिवमुत्पत्ति।

ये वै तन्वं विसृजन्ति धीरास्ते जनासो अमृतत्वं भजन्ते।।

पद्मपुराण के अनुसार जिस प्रकार सभी ग्रहों में सूर्य तथा नक्षत्रों में चन्द्रमा सर्वश्रेष्ठ है, ठीक उसी प्रकार सभी तीर्थों में प्रयाग सर्वश्रेष्ठ है-

ग्रहाणां यथा सूर्यो नक्षत्राणां यथा शशी।

तीर्थानामुत्तमम तीर्थ प्रयागख्यमनुत्तमम्।।

इसमें तीर्थराज प्रयाग के माहात्म्य का वर्णन करते हुए 'से तीर्थ राजो जयति' कहकर सम्बोधित किया गया है-

ब्राह्मी न पुत्री त्रिपथागास्त्रिवेणी सभागमेनासत् योगमात्रं।

यत्राप्लुता न ब्रह्म पद नयन्ति, सतीर्थराजो जयन्ति प्रयाग।।[4]

अर्थात् गंगा, यमुना, सरस्वती का जहाँ पवित्र संगम है, जहाँ पर स्नान करने से व्यक्ति ब्रह्म पद की प्राप्ति कर लेता है, ऐसे तीर्थराज प्रयाग की जय हो।

अग्नि पुराण में इसे 'पृथ्वी की जंघा' कहकर पुकारा गया है। ठीक इसी प्रकार मत्स्य पुराण में प्रयाग माहात्म्य का वर्णन करते हुए इसे 'सर्वाधिक पूजनीय' कहा गया है-

तथा सर्वेषु लोकेषु प्रयाग पूजयेद् बुधः।

पूज्यते तीर्थ राजस्तु सत्यमेव युष्ठिर।।[5]

प्रयाग में प्रत्येक वर्ष कुम्भ, 12वें वर्ष महाकुम्भ तथा प्रति 6ठवें वर्ष अर्द्धकुम्भ का आयोजन इसकी महत्ता को कई गुना बढ़ा देता है। नारदपुराण के अनुसार जब मकर राशि में सूर्य का प्रवेश होता है तथा वृष राशि में वृहस्पति प्रवृष्ट होता है, उस समय प्रयाग में दुर्लभ कुम्भ का योग बनता है-

मकरे च दिवानाथे वृषगे च बृहस्पतौ।

कुम्भयोगो भवेतत्व प्रयाग हयति दुर्लभम्।।[6]

इस कुम्भ पर्व का आयोजन प्रत्येक वर्ष माघ के महीने में किया जाता है, जब सूर्य, चन्द्रमा मकर राशि में चले जाते हैं लेकिन महाकुम्भ उस समय लगता है जब 12 वर्ष बाद वृहस्पति के क्रान्तिवृत्तीय परिक्रमा के पश्चात 13वें वर्ष में पुनः मेष राशि में आने पर चन्द्रमा व सूर्य मकरराशि में चले जाते हैं। धार्मिक मान्यता के अनुसार मकर

राशि पर सूर्य के संचार के समय समस्त देवी-देवता तथा समस्त तीर्थ इसमें आकर विलीन हो जाते हैं। ऋग्वेद में कुम्भ पर्व को सभी प्रकार के पापों का नाशक बताया गया है-

जघान वृत्रं स्वधितिबनेव सरोज पुरो अदन्न सिन्धुना।

विभेद गिरिं-नवभिन्न कुम्भनाम इन्द्रो स्वयुग्भिः।।[7]

वैदिक ग्रन्थों में कुम्भ पर्व को शारीरिक सुख प्रदान करने वाला बताया गया है-

कुम्भो वनिंष्टुर्जनिता शचीभिर्यस्मिन्नग्रे योन्यां गर्भोन्तः।

रताशिर्व्यक्तः शताधाऽउत्सो दुहे न कुम्भी स्वधा पितृभ्यः।।[8]

कुम्भपर्व का आयोजन प्रयाग, नासिक, उज्जैन, हरिद्वार जैसे स्थलों पर ही किया जाता है। गरूण पुराण तथा स्कन्दपुराण के अनुसार जब देवताओं तथा असुरों के बीच समुद्रमंथन के परिणामस्वरूप चौदह रत्न (कौस्तुभमणि, कल्पवृक्ष, लक्ष्मी, वारूणी, अश्व, धन्वन्तरि, कालकूट विष, शारंधर, पांचशंख तथा अमृत) निकले। इन सभी चौदह रत्नों में सर्वाधिक बहुमूल्य व अन्तिम रत्न अमृत था। यह एक कुम्भ (घड़े) में स्थित था। इस घड़े को देवताओं के कहने पर जयन्त ने चुरा लिया। लेकिन तभी असुरों के गुरू शुक्राचार्य ने असुरों को देवताओं के इस चालाकी के बारे में आगाह कर दिया। इस कारण देवताओं तथा असुरों के बीच देवासुर संग्राम प्रारम्भ हो गया। इस संघर्ष के दौरान कलश से अमृत की कुछ बूँदे प्रयाग, नासिक, उज्जैन, हरिद्वार में छलककर गिर गयी। इसी कारण इन चार स्थानों पर कुम्भ का आयोजन किया जाता है। प्रयाग में छोटे-बड़े अनेक तीर्थ स्थल विस्तृत रूप से फैले हुए हैं, यहाँ के प्रमुख तीर्थ स्थलों में अक्षयवट, सरस्वती कूप, प्रतिष्ठानपुरी, नागवासुकी मन्दिर, हंसप्रयतन तीर्थ, शेषतीर्थ, कोटि तीर्थ, सांध्यवट (झूंसी), भोगवती, ऋणमोचन तीर्थ, लेटे हनुमान/बड़े हनुमान मन्दिर, मनकामेश्वर मन्दिर, भारद्वाज आश्रम, अलोपी मन्दिर, अन्तर्वेदी के माधव, मध्यवेदी के माधव, बहिर्वेदी के माधव इत्यादि उल्लेखनीय है।

मत्स्य पुराण के अध्याय 104 में तीर्थराज प्रयाग के माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहा गया कि प्राचीन काल में प्रयाग के प्रतिष्ठानपुर से वासुकिहदतकका भाग जहाँ कम्बल तथा अश्वतर बहुमूलक नामधारी नाग निवास करते थे जो तीनों ही लोकों में प्रजापति के नाम से पहचाने जाते थे। इस स्थान पर स्नान करने वाला व्यक्ति मृत्यु के पश्चात स्वर्ग लोक में स्थान प्राप्त करता है। यहाँ पर ब्रह्मा इत्यादि देवता संगठित होकर लोगों की रक्षा करते हैं। इस क्षेत्र में

कई तीर्थस्थान है जिनका वर्णन सौ वर्ष में भी नहीं किया जा सकता है। यहाँ पर 60,000 वीर धनुर्धर गंगा की रक्षा करते हैं तथा सात घोड़ों से युक्त रथ पर आसीन सूर्य देव यमुना की देखरेख करते हैं। भगवान श्रीहरि विष्णु तथा देवताओं के राजा इन्द्र पूरे प्रयाग क्षेत्र की रक्षा करते हैं।[9] महेश्वर सदा इस स्थान पर स्थित वट वृक्ष की रक्षा करते हैं। इस क्षेत्र में अधर्मी मनुष्य देवताओं की रक्षा करने के कारण प्रवेश नहीं कर सकता है। प्रयाग के नाम-संकीर्तन अथवा प्रयाग की पावन मिट्टी के दर्शन मात्र से व्यक्ति के समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। तीर्थराज प्रयाग में 5 कुण्ड हैं, उन्हीं के बीच गंगा का जल प्रवाहित होता है। यहाँ पर पहुँचने मात्र से व्यक्ति के सभी पाप क्षय हो जाते हैं, हजारों किमी दूर से इस परमपवित्र गंगा के स्मरण से ही मोक्ष प्राप्त की जा सकती है। यहाँ पर स्नान करने से मनुष्य की कई पीढ़ियाँ तर जाती हैं। यहाँ पर ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए देवताओं तथा पितरों का तर्पण करना अधिक फलदायी है। इस क्षेत्र में नदी रूप में बहकर आयी हुई सूर्य देव की पुत्री यमुना का निवास सर्वदा बना रहता है। देवाधिदेव शंकर को भी यह स्थान प्रिय है। देव, दानव, गन्धर्वगण तथा साधारण मनुष्य भी गंगा जल के स्पर्श मात्र से ही स्वर्ग लोक पहुँच जाते हैं। यमुना नदी में स्नान करने वाला व्यक्ति निरोग व दीर्घायु होता है, वह दीर्घकाल तक आग में तपाए हुए स्वर्ण की भाँति, सूर्यसदृश तेजस्वी विमानों द्वारा स्वर्ग में पहुँचकर सुख की अनुभूति करता है, वहाँ पर वह समस्त रत्नों से सुसज्जित कई रंगों की ध्वजाओं से युक्त अप्सराओं से भरे हुए शुभकारी लक्षणों से सम्पन्न मांगलिक गीतों तथा बाजों की ध्वनि द्वारा नींद से जगाया जाता है।[10] मनुष्य देश, विदेश, घर अथवा घर से बाहर कहीं भी हो, यदि वह प्रयाग की पावन भूमि का स्मरण करता है तो वह ब्रह्मलोक प्राप्त करता है। इस क्षेत्र की भूमि स्वर्णमयी तथा वृक्ष इच्छानुरूप फल देते हैं। यहाँ पर गौ दान का विशेष महत्व है। गौ को गंगा-यमुना के संगम पर ऐसे ब्राह्मण को दान करना चाहिए जो सफेद वस्त्र धारण करता हो, वेदों का प्रकाण्ड विद्वान हो, धर्मज्ञ हो तथा शान्त स्वभाव का हो। इस प्रकार विधि विधान के अनुसार गौ दान करने वाला, गौ के शरीर में जितने रोयें होते हैं, उतने वर्षों तक स्वर्ग लोक में सुखपूर्वक निवास करता है।[11] मत्स्य पुराण के अनुसार दुर्गम स्थान पर विपरीत परिस्थिति में महापातक के घटित हो जाने पर केवल गाय ही रक्षा कर सकती है, इस कारण व्यक्ति को श्रेष्ठ ब्राह्मण को गौ दान देना चाहिए तथा गौ दान, स्वर्ण, मोती, मणि जैसी बहुमूल्य सामग्री का दान ग्रहण करने वाले ब्राह्मण को भी अत्यधिक सावधान रहना चाहिए क्योंकि जब तक उसके पास इस प्रकार की सामग्री रहती है तब तक दान ग्रहणकर्ता के सारे तीर्थ विफल रहते हैं।

मत्स्य पुराण में प्रयाग की ही भाँति प्रयाग के समीपवर्ती अनेक तीर्थ स्थलों का विस्तृत रूप में वर्णन प्राप्त होता है। एक स्थान पर ऋषि मार्कण्डेय युधिष्ठिर के प्रश्नों का उत्तर देते हुए कहते हैं कि प्रयाग में यात्रा करके, यहाँ की पवित्र नदियों में स्नान करके मुनष्य अपनी आगे व पीछे की कई पीढ़ियों का उद्धार कर देता है। जो व्यक्ति इस क्षेत्र में स्नान आदि करता है, वह अश्वमेघ यज्ञ के बराबर पुण्य प्राप्त करता है तथा प्रलय के पश्चात स्वर्गलोक में निवास करता है। गंगा नदी के पूर्वी तट पर तीनों ही लोकों में प्रसिद्ध समुद्रकूप तथा प्रतिष्ठानपुर (झूँसी) है। प्रतिष्ठानपुर (झूँसी) से उत्तर दिशा की तरफ हंसपतन नाम का तीर्थ स्थल है, यह तीनों ही लोकों में प्रसिद्ध है। यहाँ पर स्नान कर लेने से भी व्यक्ति अश्वमेघ यज्ञ के बराबर पुण्य प्राप्त करता है तथा सूर्य, चन्द्रमा की स्थितिपर्यन्त स्वर्गलोक में निवास करता है। इसी प्रकार जो व्यक्ति विशाल हंसपाण्डुर एवं उर्वशीरमण नामक तीर्थस्थलों पर अपने प्राणों का त्याग करता है, वह भी दुर्लभ फल प्राप्त करता है। जो व्यक्ति तीर्थराज प्रयाग में सफेद वस्त्र पहनकर तथा जितेन्द्रिय होकर महीने भर एक समय भोजन ग्रहण करता है, वह प्रत्येक जन्म में चक्रवर्ती सम्राट होता है। उसे स्वर्ण आभूषणों से सुसज्जित अनेकों स्त्रियाँ प्राप्त होती हैं। यहाँ पर वासुकिह्रदकी के उत्तर में भोगवती तथा दशाश्वमेघ नामक तीर्थ हैं। इस स्थान पर स्नान करने से मनुष्य अश्वमेघ यज्ञ के बराबर पुण्य प्रापत करता है। चारों वेदो के अध्ययन से जो पुण्य प्राप्त होता है, वह प्रयाग की यात्रा से ही प्राप्त किया जा सकता है। जहाँ कई तीर्थों से युक्त सौभाग्यदायिनी एवं महातपस्विनी गंगा बहती है, उस क्षेत्र को स्वतः सिद्ध क्षेत्र मानना चाहिए। गंगा पृथ्वीतल पर मनुष्यों को, पाताल में नागों को एवं स्वर्गलोक में देवताओं को तारती है, इसलिए गंगा को त्रिपथगा भी कहा जाता है। मृत व्यक्ति की अस्थियाँ जितने समय तक गंगा नदी में विद्यमान रहती हैं, उतने समय तक वह स्वर्गलोक में निवास करता है। गंगा नदी समस्त नदियों में महानदी है, यह महापापी प्राणी को भी मोक्ष प्रदान करती है।

गंगा तो सर्वत्र सुलभ है परन्तु गंगाद्वार प्रयाग में तथा गंगासागर संगम में दुर्लभ कहीं गई है। इन क्षेत्रों में स्नान करने वाला व्यक्ति स्वर्गलोक चला जाता है तथा यहाँ पर प्राण त्यागने वाला पुनर्जन्म से मुक्त हो जाता है। जिन लोगों का चित्त पाप से आच्छादित है तथा वे उससे मुक्ति पाने के लिए प्रयासरत हैं, उन सभी लोगों के लिए गंगा के समान कोई अन्य सर्वसुलभ साधन नहीं है। भगवान महेश्वर के जटाजूट से निकली मंगलकारी गंगा समस्त पापों का नाश करने वाली है, यह पवित्रों में भी परमपवित्र तथा मंगलों में मंगलस्वरूपा हैं।[12] गंगा नदी के उत्तरी तट पर मानस तीर्थ

है, यहाँ पर तीन दिन तक बिना अन्न जल के उपवास रहने वाले व्यक्ति की सभी मनोकामनाएं पूर्ण हो जाती हैं। मानस तीर्थ के स्मरण मात्र से गौ, पृथ्वी, सुवर्ण दान करने के बराबर पुण्य प्राप्त होता है। जो व्यक्ति निष्काम भाव से गंगा नदी में डूबकर मृत हो जाता है, उसे नरक का दर्शन ही नहीं करना पड़ता है बल्कि वह तो हंस व सारस से युक्त विमान पर आसीन होकर स्वर्गलोक चला जाता है।[13] प्रयाग के दक्षिण की तरफ तथा यमुना नदी के उत्तरी तट पर ऋणमोचन नामक तीर्थस्थल है, यह परमश्रेष्ठ तीर्थस्थल है। यहाँ पर एक रात्रि निवास कर स्नान करने से व्यक्ति समस्त पापों से मुक्त हो जाता है तथा सदैव के लिए स्वर्गलोक चला जाता है। विश्वासघाती व्यक्ति भी यदि प्रयाग में आता है तो वह भी समस्त धन-धान्य से परिपूर्ण होकर अविनाशी पद प्राप्त कर लेता है। यमुना नदी के पश्चिम में धर्मराज तीर्थ तथा दक्षिण में अग्नितीर्थ नामक तीर्थस्थल है, यहाँ पर स्नान करके व्यक्ति स्वर्ग को चला जाता है। यमुना नदी के उत्तरी तट पर महात्मा सूर्य का नीरूजक नामक तीर्थ है। यहाँ पर देवराज इन्द्र सहित समस्त देवता त्रिकाल संध्योपासना करते हैं। गंगा तथा यमुना दोनों ही नदियाँ समान पुण्य प्रदान करती हैं, ज्येष्ठ होने के कारण सर्वत्र गंगा की ही पूजा की जाती है। मत्स्य पुराण के अनुसार जो व्यक्ति श्राद्धहीन है, जिसके चित्त में पाप ने सत्व जमा लिया है, ऐसे पापी मनुष्य के सामने प्रयाग के माहात्म्य का वर्णन करना उचित नहीं है। जो व्यक्ति समस्त प्रकार के रत्न ब्राह्मणों को देता है उसे भी उतना पुण्य नहीं प्राप्त होता है, जितना कि प्रयाग में निवास करने तथा मृत्यु प्राप्त करने पर होता है। यहाँ पर ब्रह्मा सभी प्राणियों में निवास करते हैं तथा ब्राह्मणों में उनका कुछ विशेष अंश पाया जाता है जिसके कारण वे सब ब्रह्मा कहे जाते हैं।[14]

प्रयाग के माहात्म्य का वर्णन करते हुए आगे कहा गया कि नैमिषारण्य, पुष्कर, सिन्धुसागर, गोतीर्थ, गया तीर्थ, धेनुक, गंगा सागर तथा तीन करोड़ दस हजार अन्य तीर्थ प्रयाग के अन्तर्गत आ जाते हैं। यहाँ पर तीन अग्निकुण्ड हैं जिनके बीच से समस्त तीर्थों द्वारा सम्मानित परमपवित्र गंगा नदी प्रवाहित होती है। यहाँ पर लोक भाविनी सूर्य देवी की पुत्री यमुना गंगा के साथ मिलकर प्रवाहित होती हैं। गंगा तथा यमुना का यह मध्य भाग पृथ्वी का जघन्य स्थल कहलाता है। अन्तरिक्ष तथा स्वर्गलोक सभी मिलकर प्रयाग में विद्यमान गंगा की 16वीं कला की भी बराबरी नहीं कर सकते हैं। प्रयाग स्थित झूँसी में कम्बल तथा अश्वतर नामक दो नागों का निवासगृह है। यहाँ पर देवता, चक्रवर्ती सम्राट इत्यादि यज्ञों के माध्यम से यजन करते हैं। तीनों ही लोकों में प्रयाग के समान कोई अन्य तीर्थ नहीं हैं। यह

स्वर्गप्रद, सत्य, सुखदायी, पुण्यदायी, धर्म स्वरूप, धर्म सम्पन्न तथा समस्त पापों का नाशक है। ज्ञान योग तथा तीर्थ प्राप्ति का संयोग दुर्लभ होता है, इसके संयोग से व्यक्ति को परमपद (मोक्ष्य) की प्राप्ति होती है।[15] प्रयाग में ये दोनों ही उपलब्ध होने के कारण यह अत्यधिक महत्वपूर्ण तीर्थस्थल है।

प्रयाग के अविनाशी स्वरूप का वर्णन करते हुए ऋषि मार्कण्डेय जी कहते हैं कि प्रयाग का मण्डल पाँच योजन तक विस्तृत है। इस स्थान पर देवतागण पापकर्म का नाश तथा प्राणियों की रक्षा करते हैं। यहाँ पर प्रतिष्ठानपुर से उत्तर की तरफ गुप्तरूप में ब्रह्मा जी, वेणीमाधव रूप में विष्णु जी, अक्षयवट के रूप में देवाधिदेव शंकर निवास करते हैं। इसके साथ-साथ गन्धर्वसहित देवतागण, कई धनुर्धर वीर योद्धा प्रयाग की रक्षा में सदैव तत्पर रहते हैं। इस प्रकार प्रयाग में ब्रह्मा, विष्णु, महेश्वर सातों द्वीप, सातों समुद्र तथा पृथ्वीतल पर स्थित समस्त पर्वत उसकी रक्षा करते हुए प्रलयपर्यन्त स्थित रहते हैं। यहाँ पर धर्मराज युधिष्ठिर अपनी पत्नी द्रौपदी तथा समस्त भाईयों के साथ ब्राह्मणों को नमस्कार कर, गुरूजनों तथा देवी-देवताओं को तर्पण द्वारा सन्तुष्ट किया, ठीक उसी समय भगवान वासुदेव भी वहीं आ पहुँचे, अब सभी पाण्डवों ने मिलकर वासुदेव श्रीकृष्ण की पूजा की। अब मार्कण्डेय ऋषि समेत सभी महात्माओं तथा भगवान श्री कृष्ण युधिष्ठिर समेत उनके भाई व द्रौपदी को आशीर्वाद दिया। इसके बाद धर्मराज युधिष्ठिर अपने भाइयों संग वहीं पर निवास करने लगे। प्रयाग के महात्म्य का वर्णन करते हुए एक स्थान पर कहा गया कि जो व्यक्ति प्रातः काल उठकर इस माहात्म्य का पाठ करता है एवं नित्य तीर्थराज प्रयाग का स्मरण करता है, वह परमपद अर्थात् मोक्ष को प्राप्त कर लेता है, तथा सभी प्रकार के पापों से मुक्ति पाकर भगवान शिव के लोग में निवास करता है।[16] भगवान वासुदेव श्रीकृष्ण जी प्रयाग के माहात्म्य का वर्णन करते हुए कहते हैं कि जो व्यक्ति प्रयाग की यात्रा करता है अथवा वहाँ पर निवास करता है, वह समस्त पापों से मुक्त होकर रूद्रलोक को चला जाता है, जो प्रतिगृह से विमुख, सन्तृप्त, जितेन्द्रिय, पवित्र तथा अहंकार से दूर रहता है, उसे इस तीर्थफल की प्राप्ति होती है। जो क्रोध रहित, सत्यवादी, ईमानदार, दृढ़निश्चयी तथा समस्त प्राणियों के साथ समान व्यवहार करता है वह इस तीर्थफल का भागी होता है। इस पुण्यप्रदायी तीर्थ की यात्रा ऋषि-मुनियों क लिए अत्यधिक गोपनीय तथा यज्ञों से भी बढ़कर फलदायक है।[17]

निष्कर्ष:-

प्रयाग तीर्थों का राजा है इसी कारण इसे तीर्थराज प्रयाग कहा जाता है। ब्रह्मा जी द्वारा सर्वप्रथम यहीं पर प्रकृष्ट यज्ञ सम्पन्न किए जाने के कारण इस क्षेत्र का नाम प्रयाग पड़ा। गंगा, यमुना तथा अदृश्य सरस्वती नदी का मिलन स्थल होने के कारण यह संगम नगरी अथवा संगम क्षेत्र के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ पर अनेक छोटे-बड़े तीर्थ स्थल विस्तृत रूप में फैले हुए हैं जिसे देखने के लिए न सिर्फ देश के कोने-कोने से बल्कि विदेशों से भी लोग आते हैं। पौराणिक मान्यता के अनुसार ब्रह्मा, विष्णु, महेश समेत सभी देवी-देवता सदैव इस क्षेत्र में निवास करते हुए इसकी रक्षा करते हैं। इस क्षेत्र की यात्रा करना, यहाँ की पवित्र नदियों में स्नान करना तथा यहाँ पर गौ इत्यादि का दान देना अत्यधिक मंगलकारी है। इस पवित्र तीर्थस्थल की यात्रा करने वाला, यहाँ पर निवास करने वाला एवं यहाँ पर मृत्यु प्राप्त करने वाला मनुष्य जीवन-मरण के बन्धन से सदैव के लिए मुक्त हो जाता है। हजारों किमी0 दूर से भी इस क्षेत्र का स्मरण मात्र करने वाला व्यक्ति भी धन-धान्य से परिपूर्ण हो जाता है तथा मृत्यु के पश्चात स्वर्गलोक में निवास करता है।

संदर्भ सूची-

1. पद्म पुराण, 19/16-17
2. वही, 13/23-24
3. स्कन्द पुराण, काशीखण्ड, 7/49
4. पद्म पुराण, 6/23/34
5. मत्स्य पुराण, 105/55
6. नारद पुराण, 2/63/7
7. ऋग्वेद, 10/83/7
8. शुक्ल यजुर्वेद, 19/87
9. मत्स्य पुराण, 104/1-9
10. वही, 104/9-12
11. वही, 105/12-23

12. वही, 107/28-56
13. वही, 108/1-6
14. वही, 109/1-17
15. वही, 109/110
16. वही, 112/1-22
17. वही, 181/1-32